

विंशत्युत्तमस्तु भद्राणां हविः नक्षत्री चक्रः श्रीभक्तगङ्गातीर्त्तवत् सुद्वेने एतन्निर्दिष्टः॥

विंशत्युत्तमस्तु भद्राणां हविः नक्षत्री चक्रः श्रीभक्तगङ्गातीर्त्तवत् सुद्वेने एतन्निर्दिष्टः॥

शुद्धिस्तुष्टिः कण्ठः॥

विंशत्युत्तमस्तु भद्राणां हविः नक्षत्री चक्रः श्रीभक्तगङ्गातीर्त्तवत् सुद्वेने एतन्निर्दिष्टः॥

शुद्धिस्तुष्टिः कण्ठः॥

विंशत्युत्तमस्तु भद्राणां हविः नक्षत्री चक्रः श्रीभक्तगङ्गातीर्त्तवत् सुद्वेने एतन्निर्दिष्टः॥

शुद्धिस्तुष्टिः कण्ठः॥

विंशत्युत्तमस्तु भद्राणां हविः नक्षत्री चक्रः श्रीभक्तगङ्गातीर्त्तवत् सुद्वेने एतन्निर्दिष्टः॥

शुद्धिस्तुष्टिः कण्ठः॥

विंशत्युत्तमस्तु भद्राणां हविः नक्षत्री चक्रः श्रीभक्तगङ्गातीर्त्तवत् सुद्वेने एतन्निर्दिष्टः॥





3

भंवा ७ ह्येष्टमति भुवसं मन्त्रं संभुमं ३  
 मुदि १५ १३ भिवुगि ३ कइम  
 गं ०९१ भदंमाः १३ बुधुमा ०७ सं १९  
 १० ३१ गन नषमं ३१ वधु रमाः मुठयामु

पदमन्त्रमा कंठनप्रिय



६ १०  
 ६२ ६६





५  
मया यत्तु मया कर्तुं भव कर्तुं न भव  
नमः कर्तुं मेव यत्तु मया कर्तुं न भव  
नमः मम भुगी च न च नमः कर्तुं न भव  
नमः भुगी कर्तुं मया कर्तुं न भव  
नमः भुगी कर्तुं मया कर्तुं न भव

5  
सुभक्तलं एव च दामा ठि व च न गं  
सुभक्तं स एः भवे गता भुन गुरु मि व भा ॥  
सुभक्तं मि गाने न ल्ल मि तां रं सुभा भय  
उल्ले स ए उं मि तु न वि भु उ च उ भ द व ॥





6





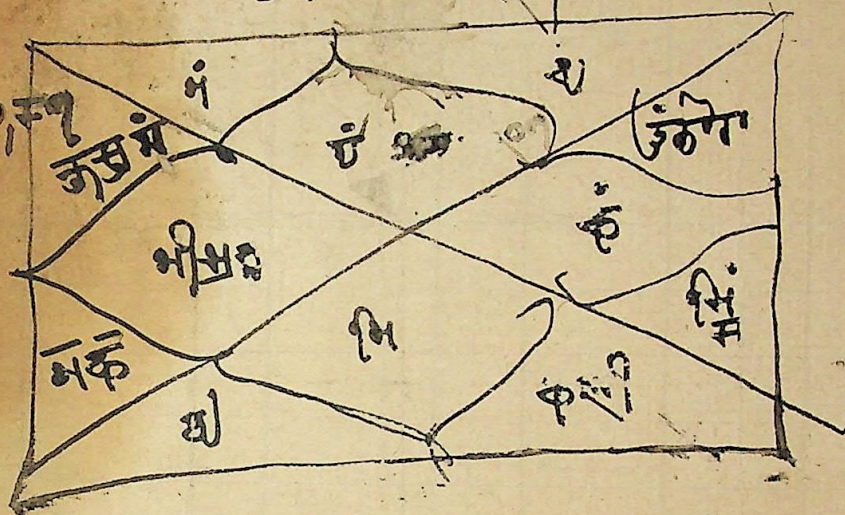
न का एउभिन्नमयरे

उचलन कवनीलन ॥

अदृष्ट भरेडिः॥

अथ एतदसकृत्

अभिज्ञान



अभिज्ञान ००१०३

१  
मंदा ७५ मानवसि विगीयं गवे  
सुदामि ००, ३७ विमि ०३, ३ ५०५, ५३  
५३ ०, ३३ जेमुपूरुपुडे  
गन् ००, ५५ अदंसाः ७ उहं, ३५

यगो गूम नगल कसु प्रसमभसवि  
कटारान्न ॥



七

10

[illegible]

यथा ॥ ५ ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥

वयं भू भू भू उहं वयं ह्रीं वरुणाय

ॐ भगवते नमः

पि३ अंममन्मिः सुनण्डमनः५

नः कुरु मन्त्रायणा वम ह्म कुरु मन्त्र

ਸ ਪ੍ਰਸੰਨ: ਪਿਤਾ ਸ੍ਰੀ ਸਾ ੩ ਸ੍ਰੀ ੮

नः ११ वं ६३ उं भस्म मुदं नः ३ नः ११ वं ६३ उं भस्म मुदं नः ३ नः ११ वं ६३ उं भस्म मुदं नः ३

भडि नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु

ਪੁਨਰਿ ਧਰਮੀ ਅਮਿਤਿ ਪਤਿ ਨਿਰਿ ॥

संख्येयुः ॥ यदनुभित

ਪ੍ਰਸਿਦਾ ਪ੍ਰਤਿ



॥ १ ॥  
 ॥ २ ॥  
 ॥ ३ ॥  
 ॥ ४ ॥  
 ॥ ५ ॥  
 ॥ ६ ॥  
 ॥ ७ ॥  
 ॥ ८ ॥  
 ॥ ९ ॥  
 ॥ १० ॥  
 ॥ ११ ॥  
 ॥ १२ ॥  
 ॥ १३ ॥  
 ॥ १४ ॥  
 ॥ १५ ॥  
 ॥ १६ ॥  
 ॥ १७ ॥  
 ॥ १८ ॥  
 ॥ १९ ॥  
 ॥ २० ॥  
 ॥ २१ ॥  
 ॥ २२ ॥  
 ॥ २३ ॥  
 ॥ २४ ॥  
 ॥ २५ ॥  
 ॥ २६ ॥  
 ॥ २७ ॥  
 ॥ २८ ॥  
 ॥ २९ ॥  
 ॥ ३० ॥  
 ॥ ३१ ॥  
 ॥ ३२ ॥  
 ॥ ३३ ॥  
 ॥ ३४ ॥  
 ॥ ३५ ॥  
 ॥ ३६ ॥  
 ॥ ३७ ॥  
 ॥ ३८ ॥  
 ॥ ३९ ॥  
 ॥ ४० ॥  
 ॥ ४१ ॥  
 ॥ ४२ ॥  
 ॥ ४३ ॥  
 ॥ ४४ ॥  
 ॥ ४५ ॥  
 ॥ ४६ ॥  
 ॥ ४७ ॥  
 ॥ ४८ ॥  
 ॥ ४९ ॥  
 ॥ ५० ॥  
 ॥ ५१ ॥  
 ॥ ५२ ॥  
 ॥ ५३ ॥  
 ॥ ५४ ॥  
 ॥ ५५ ॥  
 ॥ ५६ ॥  
 ॥ ५७ ॥  
 ॥ ५८ ॥  
 ॥ ५९ ॥  
 ॥ ६० ॥  
 ॥ ६१ ॥  
 ॥ ६२ ॥  
 ॥ ६३ ॥  
 ॥ ६४ ॥  
 ॥ ६५ ॥  
 ॥ ६६ ॥  
 ॥ ६७ ॥  
 ॥ ६८ ॥  
 ॥ ६९ ॥  
 ॥ ७० ॥  
 ॥ ७१ ॥  
 ॥ ७२ ॥  
 ॥ ७३ ॥  
 ॥ ७४ ॥  
 ॥ ७५ ॥  
 ॥ ७६ ॥  
 ॥ ७७ ॥  
 ॥ ७८ ॥  
 ॥ ७९ ॥  
 ॥ ८० ॥  
 ॥ ८१ ॥  
 ॥ ८२ ॥  
 ॥ ८३ ॥  
 ॥ ८४ ॥  
 ॥ ८५ ॥  
 ॥ ८६ ॥  
 ॥ ८७ ॥  
 ॥ ८८ ॥  
 ॥ ८९ ॥  
 ॥ ९० ॥  
 ॥ ९१ ॥  
 ॥ ९२ ॥  
 ॥ ९३ ॥  
 ॥ ९४ ॥  
 ॥ ९५ ॥  
 ॥ ९६ ॥  
 ॥ ९७ ॥  
 ॥ ९८ ॥  
 ॥ ९९ ॥  
 ॥ १०० ॥

सर्वभूतबद्धं

मरुवा मरुका मरुनी मरुमानधूठतु ॥ १ ॥  
 मरुवा गिभूमिभूते मरुवा द्रवते दविः म  
 ठगष्ट भवनि वसम वसय मभि ॥ प्रियं मरु  
 मरुतः ॥ प्रियं मरु मिम भतः ॥ प्रियं मरु री  
 मरुमिदम उमिद नूति ॥ वषा मरु मरुते धु  
 मरुमगुधमनिर एवं मरु धय रू मरु क म  
 उरुति ॥ मरु नै व थरा मान वयगिपा ॥ ७ ॥  
 मरुते मरु ह्य वृष्टा कुत मरुय विनते वम  
 मरु मरुते व मरु मरु मरुनि न परि ॥ म



दसु निभूमि मरु मरु पयं डनः ॥ त्रिपिठसुभे  
मडे पम् ॥ नुविधीभा यमृडिउ वृरभा वडुपि  
चमरु यडा ॥ मयेपिउ मठे पिउ वयन्तु वय  
मड नम्र कंम विउ ठव ॥ उपनः पिउ वयन्तु  
मिषा ठि कुडिठिः ॥ मयेतुर विष ॥ म्माप म्  
वन्तु वयः ॥ उवटु पिउ म्मा गण्डुन विषिउ  
विषा उ उव विउः ॥ उवटु पिउ म्मा उव  
मिषुउ पिउ ॥ म्मा म्मा नम्र म्मा उवि  
विषा उव गण्डु ॥ उविउ म्मा न न्मा म्मा म्मा  
मिषा म्मा म्मा म्मा म्मा म्मा म्मा म्मा म्मा

यमः पिउं नृणां त्रिविधं पचतां नं नर  
 सिने भवे पिउं रं कृत्वा यगमूः न यम  
 धा भे धर्मीनं परिममा गिसा भडे क  
 ता पपीव नु कृत्वा क रभु ता धर्मीन  
 वपीवे व क उदा गविः क ता पपीव न  
 उचु ययं पिउं कमे नि न येन कृत्वा म  
 मे मि मु मे वे ह मू भू भू भू भू भू भू  
 भू भू भू भू न न न भू भू य पिउं भू  
 उति तु य नं सा न न भू भू य पिउं  
 भू भू पिउं वे व ति धूः धू पा  
 लः धू भू भू पिउं मि धू उ हे न



पच्छिंशं

मृ वयमि मयूर

16

प्रः परिमयूर ७ मयूर १ मयूर १

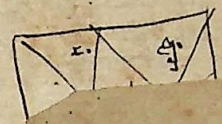
मयूर १ मयूर १ मयूर १ मयूर १

उत्तम १ मयूर १ मयूर १ मयूर १

वदन्ते परिमयूर ७ मयूर १ मयूर १ मयूर १

17

श्रीगुरुभक्त्युत्तम  
मुनिभक्त्युत्तम



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

उक्ताभलं मधुपत्रं  
सांख्यभलं एव

५॥

9  $\frac{4}{5}$   
MK+



16

उभयगुणः भूतं यदियमवगच्छे  
परिलिखितं कृतं चक्रीतं चक्रे  
भूमिपदार्थैः, भूमि-

19

किं द्रष्टव्यं न भवति न भवति न भवति न भवति

मा धीमहि नमः ॥ भद्रं कुरु सर्वान्

सर्वान् कुरु सर्वान्



म	मः	वक्रः	धृषभेकवसनंठवति	मि	उकन
उ	उ	वक्रो	धृषभा मुचमनंठवः	स	उकन
उः	उ	वक्राः	धृषभा गुरुमनंठव	म	सकनः
उम	उं	वक्रभा	मुडीयेकवसनंठवति	म	सकन
उ	उ	वक्रो	मुडीय मुचमनं	उ	उकन
उः	उ	वक्रा	मुडीय गुरुमनं	म	सकन
उय	उ	वक्र	मुडीयेकवसनंठवति	१०	उकन
			मुडीय मुचमनंठवः	म	सकन